www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सभी प्रज्ञा संस्थान वार्षिक प्रज्ञा आयोजन की तैयारी करें

श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सभी प्रज्ञा संस्थान वार्षिक प्रज्ञा आयोजनों की तैयारी करें

'गायत्री सत्रों के साथ 'युग निर्माण सम्मेलनों के कार्यक्रम अपने मिशन द्वारा भी सम्पन्न किये जाते रहे हैं। इन्हें लोक शिक्षण की सत्संग प्रक्रिया के अन्तर्गत ही गिना जा सकता है छोटे रूप में जन्म दिवसोत्सव, घरेलू संस्कार उपक्रम, ग्राम मुहल्ले के पर्व आयोजन इसी सत्संग प्रयोजन की पूर्ति करते हैं। साप्ताहिक 'ज्ञान गोष्ठियों' नव रात्रियों के नौ दिवसीय साधना सत्रों को भी इसी हेतु इतना महत्व दिया गया है। सामूहिक लोक शिक्षण के लिए उत्साह उत्पादन इन सभी का विशिष्ठ प्रयोजन है।

इस वर्ष से सभी छोटे बड़े शक्तिपीठों और प्रज्ञा संस्थानों के लिए यह उत्तरदायित्व अनिवार्य कर दिया गया है कि वे वर्षमें एक बार अपना वार्षिकोत्सव प्रज्ञा आयोजन के रूप में सम्पन्न करें। उसके अनेक लाभ हैं। उस क्षेत्र के विचार शील जन समुदाय को बदलती परिस्थितियों से अवगत करते रहना और उद्गम केन्द्र की अधिक प्रगति के आधार पर नये सदेशों से परिचित करना तो प्रमुख उद्देश्य है ही इसके अतिरिक्त युग शिल्पी कार्यकर्ताओं की शिथिलता दूर करना और युग सन्धि के बढ़ते चरणों के साथ जुड़े हुए नये कर्तव्यों के ठीक तरह परिपालन के लिए उपयुक्त ऊर्जा प्रदान करना भी एक का काम है जो इन आयोजनों के माध्यम से सम्पन्न होगा।

सभी प्रज्ञा आयोजनों में शान्ति कुंज से प्रचार प्रतिनिधि मंडलियाँ भेजी जाया करेंगी। गत वर्ष की अपेक्षा उनके प्रचार उपक्रमों, उपकरणों में अन्तर होगा। अब चित्र प्रदर्शिनी हर वर्ष नई बना करेगी। "प्रज्ञा पुराण"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का एक नया खण्ड हरसाल प्रकाशित हुआ करेगा गायक मंडली गत वर्ष वाले नहीं नव निर्मित गीत नई ध्वनियों पर गाया करेगी। प्रवचन भी बदलती परिस्थितियों के अनुरूप सर्वथा नए हुआ करेंगे। युग सन्धि का तूफानी गति चक्र इतनी तेजी से बदल रहा है कि पिछला वर्ष एक वर्ष बाद सर्वथा नया हो जाता है और उसकी आवश्यकता बढ़ कर कहींसे कहींजापहुँचती है। शिशु विकाश में कितनी तेजी होती है इसे सभी जानते हैं। पिछले वर्ष के कपड़े खिलौने बेकार हो जाते हैं। बच्चों की आदतें और आवश्यकताएँ भी बदली जाती हैं। स्कूल में पहुँचने पर वह हर वर्ष नई कक्षा में पहुँचता और नया पाठ्यक्रम खरीदता है। फीस भी बढ़ जाती है। ठीक इसी प्रकार युग सन्धि के यह वर्ष नये संदेश लेकर आते हैं और नये तकाजे करते हैं। अतएव आवश्यक समझा गया कि प्रज्ञा पीठों, स्वाध्याय संस्थानों और कर्मठ कार्य-कर्त्ताओं तक के साथ परिस्थितियों के अनुरूप विचार विनमय किया जाय ऐसे सम्पर्क से ही आदान प्रदान का द्वार खुलता है पत्र व्यवहार एवं साहित्य काम का माध्यम है तो सही पर इतने बड़े प्रयोजन के लिए ओछा पड़ता है। इतने ही पर निर्भर रहनेसे काम चलेगा नहीं। सान्निध्य हर हालत में आवश्यक है। भले ही हर क्षेत्र का समुदाय शान्ति कुंज में एकत्रित हो पर शान्ति कुंज के प्रतिनिधि युग चेतना का सामयिक आलोक वितरण करने के लिए ही नहीं हर संगठन की परिस्थिति और उस क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं की जन समुदाय की मन--स्थिति का मूल्यांकन करने और तदनुरूप नए निर्धारण करने के निमित्त भी पहुँचा करें।

अन्यान्य सभा संगठनों की तरह अपने मिशन का कोई खास ढांचा नहीं है। वह सच्चे अर्थोंमें एक परिवार है। उसके जड़ तने के साथ टहनियों पत्तियों की जितनी घनिष्ठता रहेगी उतना ही वृक्ष हरा भरा दीखेगा। हृदय और अवयवों के बीच रक्त शिराएँ दुर्बल पड़नेसे सम्बन्ध सूत्र शिथिल पड़ेगा तो इससे हृदय भी घाटे में रहेगा और अवयवों को दुर्बलता रुग्णता का शिकार बनना पड़ेगा। मिशनकी शक्ति ऊपर से नीचे को उतरती और वितरित होती है सूरज, चन्द्रमा, बादल, पवन आन्तरिक्ष भी अपनी सम्पदा धरातल पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बरसाते हैं । ठीक इसी प्रकार प्रज्ञा अवतरण की अदृश्य शक्तियाँ हिमालय से एक-एक सीढ़ी उतर कर नीचे आती हैं और अपनी प्रेरणा से ही नहीं प्राण ऊर्जा से भी प्रज्ञा पुत्रों को अनुप्राणित करती हैं । यह तारतम्य जितना घनिष्ठ होगा उतना ही प्रवाह क्रम ठीक रहेगा ।

बिजली घर से ट्रान्स फार्मर में शक्ति प्रेरित होती है वहाँ से फिर घरों कारखानों में मीटरों के माध्यम से बिजली दौड़ती और रोशनी, पंखा,हीटर, कूलर से लेकर बड़े यन्त्र चलाने जैसे सभी काम पूरे करती है । बिजली घर और घरेलू उपकरणों का सम्बन्ध टूट जाय तो उसमें सारी व्यवस्था गड़बड़ा जायेगी । टेलीफून का एक्सचेंज काम न करे, बैंकों का केन्द्रीय तन्त्र न हो, मिलटरी का निर्धारण तन्त्र न हो तो समझना चाहिए कि मनमानी चल पड़ने पर बिखराव ही नहीं टकराव भी खड़ा होगा । सरकारी आडिट पार्टियाँ सम्बद्ध दफ्तरों की जाँच पड़ताल करने जाती हैं । यह दौरा व्यवस्था पर्यवेक्षण की दृष्टि से ही नहीं वस्तुतः समीकरण एवं वितरण की दृष्टि से भी आवश्यक है ।

प्रज्ञा संस्थानों के वार्षिकोत्सवों, प्रज्ञा आयोजनों के सम्बन्ध में भी यही बात यों कही जा सकती है । उनमें स्थानीय क्षेत्रीय वक्ताओं के भाषण होंगे, इसके लिए नवरात्रि बसन्त, गायत्री जयन्ती आदि के उत्सव पर्याप्त हैं । प्रज्ञा आयोजनों का निर्धारण मात्र एक ही उद्देश्य से किया गया है कि उस क्षेत्र के प्रबुद्ध जन समुदाय और कार्यकर्ता वर्ग को हर वर्ष उतरने वाली अभिनव चेतना से अवगत अनुप्राणित होते रहने का अवसर नियमित रूप से मिलता रहे ।

इस वर्ष दस हजार प्रज्ञा आयोजन सम्भव होने की योजना बनी है । तदनुसार केन्द्रीय प्रतिनिधियों की प्रचार मंडलियाँ गठित की गई हैं । आगामी क्षेत्रों में तो टोलियों का दैनिक सामान तथा प्रचार उपकरण लेकर पहुँचने के लिए वाहनों की व्यवस्था अनिवार्य समझी गई है । तदनुसार जीप गाड़ियों और मोटर साइकिलों का प्रबन्ध किया गया है । ताकि छोटे बड़े सभी प्रज्ञा संस्थानों तक अच्छे बुरे रास्ते पार करते हुए प्रचारक प्रतिनिधियों का साज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सज्जासहित पहुँच सकना संभव हो सके । इसके लिए प्रतिनिधि की भर्ती तथा शिक्षा की विशेष व्यवस्था इनदिनों चल पड़ी है । संगीत प्रशिक्षण का विशेष माध्यम है । सृजन परिश्रम शैली विकसित की जा रही है ताकि शिक्षित अशिक्षित सभी को भाव संवेदनाओं के साथ-साथ युग चेतना हृदयंगम करने का अवसर मिल सके ।

प्रचार वर्ष १ अक्टूबर से आरम्भ होकर ३० जून तक नौ महीने का चलता है । वर्षा के तीन महीने शान्तिकुंज में विशेष रूप से कार्यकर्ता प्रशिक्षण के लिए निर्धारित हैं । वर्षा के जुलाई-अगस्त सितम्बर महीनों में ही देश व्यापी संस्थानों में होने वाले प्रज्ञा आयोजनों की तिथियाँ निर्धारित हो जाती है । यह मंडलियाँ प्रवास चक्र के अनुरूप निश्चित होती है । किसी को मर्जी की तिथियाँ दे सकना संभव नहीं । जो तिथियाँ निश्चित हो जाती हैं उनके अनुसार सभी आयोजन कर्ता अपने-अपने ढग से तैयारी करने में जुट जाया करेंगे ।

प्रज्ञा आयोजनों में अच्छी उपस्थिति हो इसके लिए सामूहिक प्रचार अधिक उपयुक्त होता है । सूर्योदय से पूर्व गीत गाती नारे लगाती पुरुषों को प्रभात फेरी निकले, गायत्री यज्ञ होना ही है इसलिए महिलाओं को जल कलश यात्रा भी जहाँ संभव हो निकालनी चाहिए । इनके साथ-साथ आयोजन के स्थान एवं कार्यक्रम की सूचना का ऐलान भी लाउडस्पीकर से किया जाय यह कार्य जीप टोली पहुँचने से पूर्व ही कर लिया जाये तो सर्व साधारण को आयोजन के सम्बन्ध में सुनिश्चित जानकारी एवं उत्साह वर्धक प्रेरणा मिलने से लोग अधिक संख्या में सम्मिलित हो सकेंगे ।

दो दिन गायत्री यज्ञ होना है । उसमें भजन करने के लिए मन माने ढंग से लोग बैठने दिये जायें । इस आयोजन के अवसर पर कुछ नये स्वाध्याय मंडलों को स्थापनों का सरंजाम जुटा रखना चाहिए । प्रज्ञा पुरश्चरण के लिए २४ साधक जुटाने और उनकी भागीदारी ठीक प्रकार बनाये रखने वाले प्रज्ञा पुत्रों को इन यज्ञों में आहुति देने के लिए पीत वस्त्र धारण करके बिठाना चाहिए । उनका विशेष जल अभिषेक भी कराया जाय और उनके विशिष्ठ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्साह को इस अवसर पर सराहा भी जाय ।

इन सभी आजोजनों की रूप रेखा समान होगी । पिछले कार्यक्रम को पूरा करके प्रचारकों की जीप प्रायः मध्यान्ह तक नये स्थान पर पहुँच जाया करेगी । थोड़ी देर के भोजन विश्रामके बाद प्रमुख कार्यकर्ताओं से परामर्श का क्रम चल पड़ेगा । साथ ही चित्र प्रदर्शनी लगाकर उसे दिखाना आरम्भ कर दिया जायगा । रात्रि को संगीत तथा प्रवचनों की सार्वजनिक सभा होगी । यह पहले दिन का कार्यक्रम हुआ ।

दूसरे दिन प्रातः काल प्रज्ञा पुराण की कथा होगी । पाँच कुण्डी या नौ कुण्डी संक्षिप्त गायत्री यज्ञ भी सम्पन्न होगा । साथ ही चित्र प्रदर्शनी भी आगन्तुक देखते रहेंगे । तीसरेप्रहर कार्यकर्ता गोष्ठी तथा चित्र प्रदर्शनी । रात्रि को फिर संगीत प्रवचन सार्वजनिक सभा । तीसरे दिन भी ठीक यही कार्यक्रम रहेगा । चौथे दिन जीप गाड़ी सूर्योदय से पूर्व ही अगले कार्यक्रम पर चली जायगी और स्थानीय लोग उस यज्ञ आयोजन की पूर्णाहुति कर लिया करेंगे ।

इर्द-गिर्द के कार्यकर्ता स्वभावतः इस अवसर पर सम्मिलित होंगे । उनके भोजन निर्वाह का भी प्रबन्ध रहना चाहिए । अधिक लोगों की भीड़ में तो अमृताशन (दाल चावल शाक) जैसी व्यवस्था ही संभव है । पर थोड़े लोगों के लिए दाल रोटी का प्रबन्ध सहज ही होता है । पूड़ी पकवान बनाने पर सर्वत्र रोक है । वह मंहगा भी पड़ता है, झंझट भरा भी और जाँति वाद-ऊँच नीच की कुप्रथा का पारपोषक भी है अत एव उसे प्रज्ञा आयोजन से बहिष्कृत ही किया गया है ।

व्यवस्था के लिए आयोजन कर्ताओं को ही समस्त तैयारी करनी होती है । सभी के सुविधा पूर्वक पहुँच सकने योग्य सड़क के किनारे खुले स्थान का आयोजन के लिए चयन प्रथम कार्य है उसके लिए बिछावन, पंडाल, मंच, सज्जा, रोशनी सफाई लाउड स्पीकर यज्ञ शाला आदि का उपयुक्त प्रबन्ध करना आवश्यक है । नयनाभिराम सज्जा के बिना अगन्तुकोंका उत्साह उभारने में अड़चन पड़ती है । पंडाल आदर्श वाक्यों और पोस्टर बैनर्स से सजा रहे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो वहां आने वालों की दृष्टि जाते ही प्रेरणा मिलेगी,आदर्श वाक्यों से बोलती दीवारें बनाने का विधान प्रज्ञा आयोजनों के अवसर पर विशेष रूप से सम्पन्न किया जाना चाहिए। पंडाल को बड़े वाक्यों से सजाया जाय और गांव की दीवारें उनसे पूरी तरह रंग दी जायें।

प्रज्ञा आयोजनों में बाजारू भीड़ जमा कर लेने भर से काम नहीं चलेगा। उनमें मध्यम वर्ग के विचारशील लोगों को बुलाने के लिए विशेष प्रबन्ध किया जाय। इसके लिए निमन्त्रण पत्र, विवरण पत्र तथा मिशन का स्वरूप बटाने वाले तीन पत्रक लेकर उपयुक्त व्यक्तियों के घरों पर जाना चाहिए। ऐसे लोगों की लिस्ट बनाई जाय और टोली बनाकर प्रत्येक घर पर जाया जाय। इनदिनों इसी आग्रह के आधार पर समझदार लोग एकत्रित होते हैं। अन्यथा प्रवचनों की निरर्थकता से ऊबे हुए लोग उनकी पूरी तरह उपेक्षा करते हैं। लाउड स्वीकर से एलान कराना पर्चे बाँटना जैसे उपाय अब उतने कारगर नहीं होते। इससे अच्छा तो यह है कि गली सड़कों पर कपड़े के बोर्ड लगाकर आयोजन की सूचना राह चलतों को पहुँचाई जाय।

(१) निमन्त्रण पत्र (२) आयोजन का उद्देश्य (३) मिशन का स्वरूप समय दान के लिए रंगीन परिपत्र शान्ति कुंज से छपे मंगाये जा सकते है। बड़ी संख्या में छपाने हों तो आयोजनकी तारीख और स्थानभी छापा जा सकता है अन्यथा वह सूचना हाथ से लिखकर या छपे परिपत्र सस्ते भाव में मंगा कर काम चलाया जा सकता है। स्थानीय प्रेसों की तुलना में शान्ति कुंज से मंगाने पर यही सस्ते पड़ते हैं। पर उन्हें हाथों हाथ मंगाया जाय, अन्यथा पार्सल के बढ़े हुए पोस्टेज के आधार पर वे और भी महंगे पड़ जायेंगे। ऐसी दशा में नमूने मंगा कर स्थानीय प्रेस में छपा लेना ही ठीक पड़ेगा।

इस अवसर पर धन संग्रह का विशेष प्रबन्ध करना चाहिए। स्वाध्याय मंडल, प्रज्ञा संस्थान की रसीद बहीं छपा लेना चाहिए। जो पैसा लिया जाय उसका ठीक हिसाब रखा जाय। आयोजन व्यय में से जो बचत हो उससे इसी वर्ष कितने ही प्रचार उपकरण खरीदे जाने चाहिए (१) स्लाइड प्रोजेक्टर (२) टेप रिकार्डर (३) लाउड स्पीकर (४) नव निर्मित चित्र प्रदर्शनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(५) संगीत उपकरण (६) छोटा यज्ञ मंडप यह प्रचार साधन ऐसे हैं जिन्हें सभी प्रज्ञा संस्थानों के पास होना चाहिए। यह सभी वस्तुएँ मिलकर प्रायः चार हजार की बैठती हैं। इतनी राशि आयोजन के अवसर पर थोड़ा अधिक प्रयास करने से सहज ही बच सकती है। अगले वर्षों में भी कुछ ऐसी ही बचत होती रहे तो उस आधार पर मिशन के विस्तार के अनेकानेक स्थानीय कार्यक्रमों का शुभारम्भ तथा अभिवर्धन होता रह सकता है।

जिन्हें ऐसे आयोजनों का पूर्वाभ्यास नहीं है वे समीप वर्ती क्षेत्रों से अनुभवी लोगों के बुलालें। और उनके परामर्श, सहयोग का लाभ उठावें। प्रयास यह होना चाहिए कि प्रत्येक प्रज्ञा संस्थान अपने स्थान तथा क्षेत्रमें छोटे बड़े आयोजनों की व्यवस्था अपने बलबूते पर करता रह सके। जन जागरण के लिए लोक मानस के परिष्कार एवं सत्प्रवत्ति सम्वर्धन के लिए इन अयोजनों की आवश्यकता सर्वत्र समझी जानी चाहिए और उसकी उत्साह वर्धक पूर्ति बिना समय गँवाते की जानी चाहिए।

★★

क० १०७/प्र०-युग निर्माण योजना,मु०-युग निर्माण प्रेस मथुरा। मूल्य ४०पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org